विशद
लघु स्वयंभू स्तोत्र
विधान

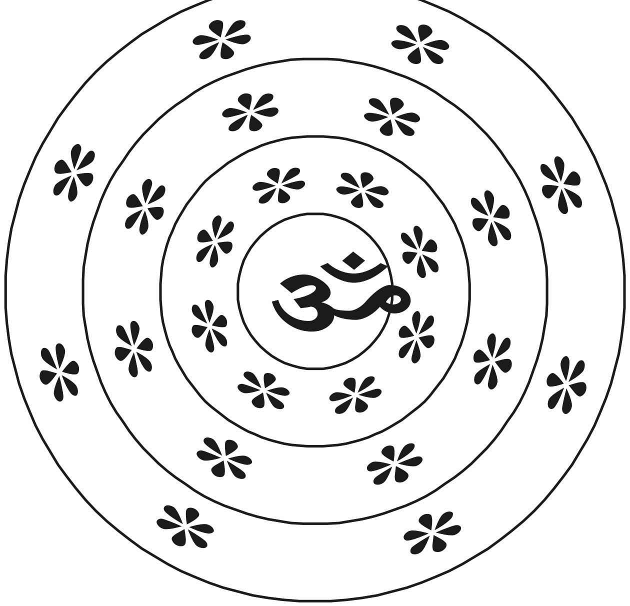

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो नमः।

aM{`Vm - प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, पंचकल्याणक प्रभावक **आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**

संस्करण - प्रथम-2013 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन - ब्र. किरण दीदी, आरती दीदी, उमा दीदी ● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, नेहरू बाजार
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन (ठेकेदार)
ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 09414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा ● मो.: 09416882301)

4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

5. जय अरिहन्त ट्रेडर्स (हरीश जैन)
6561, नेहरू गली, गाँधी नगर, दिल्ली, मो. 9818115971

मूल्य - 21/- रु. मात्र

-ः अर्थ सौजन्य ः -

श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जैन (दाहा वाले)

1 x 13748 गली नं. 4, धर्मपुरा एक्सटेन्शन

गाँधी नगर, दिल्ली-31 मो. 9212079215

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, 2363339 मो.: 9829050791

भावों से ही भव

जिन्हें जिनवर की वाणी पर, नहीं श्रद्धान होता है।
उन्हें न आत्मा का कुछ, जरा भी ध्यान होता है।।
भटकते वे मोह की अंधेरी, राह में हरदम।
नहीं उनको कभी जीवन में सम्यक्ज्ञान होता है।।

इस जहाँ में भटकते प्राणियों के लिए प्रभु की भक्ति ही बस इक सहारा है, परन्तु आज का इंसान भौतिकता की चकाचौंध से इतना भ्रमित हो रहा है कि वीतरागी प्रभु की भक्ति को भूलकर यूँ ही भ्रमण कर रहा है। अलग समय मिलता भी है तो कभी टी.वी. के पास बैठता है या कभी धर्म के नाम पर खोटे देवी–देवताओं की शरण में पहुँचता है और जैसे स्थान पर पहुँचता है वैसे ही कर्म का संचय करता है, परन्तु वीतरागी भगवान की भक्ति ही एक ऐसा स्थान है जहाँ पर जीव अगर जाता है। भगवन् की भक्ति भावों से करता है तो वहाँ से थोड़े से समय में ही अनन्त पुण्य का संचय कर लेता है।

इस समय जो वर्तमान चौबीसी के भगवन् हैं उनकी पूजा, भक्ति–अर्चा करने के लिए हमें परम पूज्य आचार्यश्री ने जो भावों के द्वारा प्रभू की भक्ति की है, उस भक्ति को शब्दों में संजोया गया है। **'लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान'** के माध्यम से गुरुदेव ने जो इतनी सरल शब्दों में हमें वीतरागी प्रभु की भक्ति का आलम्बन प्रदान किया है, उसके द्वारा जो वीतरागी प्रभु की भक्ति करेगा निश्चय से वह सम्यक्त्व को प्राप्त कर मिथ्यात्वरूपी अंधकार को दूरकर संसाररूपी सागर से पार हो सकता है।

आचार्यश्री ने हम भटकते प्राणियों को प्रभु भक्ति का जो आलम्बन दिया इसके लिए हम सदा गुरुदेव के ऋणी रहेंगे और जिस प्रकार गुरुदेव ने संयम पथ को ग्रहण कर अपना सत्यमार्ग प्रशस्त किया है उसी प्रकार हम भी संयम पथ पर चलकर सत्यमार्ग को ग्रहण कर उस मार्ग पर चलें। बस, इसी भावना के साथ गुरुदेव के पद कमल में शत् कोटि नमन्...।

–ब्र. ज्योति दीदी (संघस्थ आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज)

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव–शास्त्र–गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदिक, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नी, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरी का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ

तीर्थंकर पद के धनी, पाए गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता श्रेष्ठ प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तू पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति अरु धर्मादिक का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ ! हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

लघु स्वयंभू स्तोत्र स्तवन

दोहा- पद तीर्थंकर का प्रभु, पाए मंगलकार।
शिवपथ के राही बनें, करते भव से पार।।

आदिनाथ आदी में आए, अजितनाथ सब कर्म नशाए।
सम्भवनाथ कहे जग नामी, अभिनन्दन हैं शिवपथगामी।।
सुमतिनाथ शुभ मति के धारी, पद्मप्रभु जग मंगलकारी।
जिन सुपार्श्व महिमा दिखलाए, चन्द्रप्रभु चन्दा सम गाए।।1।।
सुविधिनाथ हैं जग उपकारी, शीतल जिन शीतलता धारी।
जिन श्रेयांस जी श्रेय जगाए, वासुपूज्य जगपूज्य कहाए।।
विमलनाथ कर्मों के जेता, जिनानन्त हैं कर्मविजेता।
धर्मनाथ हैं धर्म के धारी, शांतिनाथ जग शांतिकारी।।2।।
कुन्थुनाथ के गुण जग गाये, अरहनाथ पद शीश झुकाए।
मल्लिनाथ सब कर्म हराए, मुनिसुव्रत पावन व्रत पाए।।
नमीनाथ पद नमन हमारा, नेमिनाथ दो हमें सहारा।
पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, ढोक वीर पद में जग देता।।3।।
चौबिस जिन महिमा के धारी, कहे स्वयंभू जिन अविकारी।
जो इनके पद पूज रचाये, पुण्य निधि वह प्राणी पाए।।
जिन की महिमा यह जग गाये, अर्चा कर सौभाग्य जगाए।
भाग्य उदय मेरा अब आया, नाथ आपका दर्शन पाया।।4।।
द्वार आपका अतिशयकारी, श्रावक सुधि आते अनगारी।
भक्ति भाव से महिमा गाते, पद में सविनय शीश झुकाते।।
गाते हैं जो भजनावलियाँ, खिलती हैं भक्ती की कलियाँ।
भाव बनाकर हम यह आये, शिवपद हमको भी मिल जाए।।5।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान पूजा

स्थापना

चौबिस तीर्थंकर की भक्ती, का है अनुपम जो आधार।
लघु स्वयंभू नाम है जिसका, शुभ स्तोत्र रहा मनहार।।
श्री जिनेन्द्र की भक्ती करके, प्राणी करते निज कल्याण।
हृदय कमल के आसन पर हम, करते हैं जिन का आह्वान्।।

दोहा- पूजा करते आपकी, चरणों में भगवान।
भाव सहित करते प्रभू, आज यहाँ गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(तर्ज-वन्दे जिनवरम्...)

हम सब मिलकर करें अर्चना, तीर्थंकर भगवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्- वन्दे जिनवरम्-2

प्रासुक नीर कलश में भरकर, हम पूजा को लाए हैं।
जन्म-जरा से मुक्ती पाने, आज शरण में आए हैं।।
भव से मुक्ती दिलाने वाली, पूजा हैं भगवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्- वन्दे जिनवरम्-2

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सब मिलकर करें अर्चना, तीर्थंकर भगवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्- वन्दे जिनवरम्-2

मलयागिरि का सुरभित चन्दन, हमने यहाँ घिसाया हैं।
भव सन्ताप नशाने का शुभ, भाव हृदय में आया है।।

भव सन्ताप नशाने वाली, अर्चा है भगवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्– वन्दे जिनवरम्–2

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सब मिलकर करें अर्चना, तीर्थंकर भगवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्– वन्दे जिनवरम्–2

अक्षय पद पाने के हमने, मन में भाव जगाये हैं।
अतः धवल अक्षय ये अक्षत, आज चढ़ाने लाए हैं।।
अक्षत सुपद दिलाने वाली, पूजा है भगवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्– वन्दे जिनवरम्–2

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम सब मिलकर करें अर्चना, तीर्थंकर भगवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्– वन्दे जिनवरम्–2

काम रोग से मारे–मारे, भव सागर में भटक रहे।
कर्मों के बन्धन से चारों, गतियों में हम अटक रहे।।
जिन पूजा है तीन लोक में, आतम के उत्थान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्– वन्दे जिनवरम्–2

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सब मिलकर करें अर्चना, तीर्थंकर भगवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्– वन्दे जिनवरम्–2

काल अनादी क्षुधा रोग के, द्वारा बहुत सताए हैं।
व्यंजन सरस चढ़ाकर हम वह, रोग नशाने आए हैं।।
क्षुधा रोग को हरने वाली, है पूजा भगवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्– वन्दे जिनवरम्–2

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सब मिलकर करें अर्चना, तीर्थंकर भगवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्– वन्दे जिनवरम्–2

मोह महातम में फंसने से, सम्यक् पथ ना पाया है।
सम्यक् ज्ञान प्रकाशित करने, दीपक विशद जलाया है।।
खुशबू महके इस जीवन में, अब सम्यक् श्रद्धान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्– वन्दे जिनवरम्–2

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सब मिलकर करें अर्चना, तीर्थंकर भगवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्– वन्दे जिनवरम्–2

अष्ट कर्म की ज्वाला जलती, जिसमें प्राणी झुलस रहे।
भव्य जीव जिन पूजा करके, मोह जाल से सुलझ रहे।।
धूप से पूजा करने आये, भक्त यहाँ भगवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्– वन्दे जिनवरम्–2

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सब मिलकर करें अर्चना, तीर्थंकर भगवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्– वन्दे जिनवरम्–2
हम ना परं विशुद्ध भावना, अब तक कभी बनाए हैं।
कर्मों के फल पाये हमने, मोक्ष सुफल ना पाए हैं।।
मोक्ष महाफल देने वाली, पूजा है भगवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्– वन्दे जिनवरम्–2

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सब मिलकर करें अर्चना, तीर्थंकर भगवान की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्– वन्दे जिनवरम्–2
पद अनर्घ की महिमा अनुपम, जिनवाणी में गाया है।
अतः प्राप्त करने को वह पद, हमने लक्ष्य बनाया है।।
अष्ट द्रव्य से पूजा प्रभु की, आतम के कल्याण की।
जिनके द्वारा शिक्षा मिलती, वीतराग विज्ञान की।।
वन्दे जिनवरम्– वन्दे जिनवरम्–2

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– श्री जिनवर का रूप लख, होता हर्ष अपार।
जिन चरणों में आज हम, देते शांती धार।। *(शांतये शांतिधारा)*

गुण अनन्त सागर प्रभो, करो हमें गुणवान।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, कृपा करो भगवान।। *(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)*

जयमाला

दोहा– मुक्ती पद पाए प्रभु, तीर्थंकर चौबीस।
जयमाला गाते यहाँ, झुका चरण में शीश।।

(छन्द प्राचीन)

पर परिणति से हटकर के हम, निज परिणति में आयें रे।
जिन चौबीसों के चरण कमल में, हर्ष–हर्ष गुण गायें रे।।
रत्नत्रय के द्वारा जिनवर, केवलज्ञान जगाएँ रे।
दिव्य देशना दे भव्यों को, शिव मारग दर्शाये रे।।
कोटि पूर्व की आयु पाते, धनुष पाँच सौ काया रे।
सकल ज्ञेय ज्ञायक जिनवर को, निज स्वरूप ही भाया रे।।
प्रभु का दर्शन करके हमने, निज का ज्ञान जगाया रे।
हमको अब इतिहास स्वयं का, आज ज्ञान में आया रे।।
काल अनादी दुःख निगोद के, हमने बहु दुख पाये रे।
पृथ्वी तल अग्नी वायु अरु, तरु में जीवन पाये रे।।
दो इन्द्रिय त्रस हुए भाग्य से, दुख पाके अकुलाए रे।
त्रय इन्द्रिय के कष्ट सहे जो, हमसे कहे ना जाये रें।।
पञ्चेन्द्रिय पशु बने असैनी, मन से हीन कहाए रे।
सैनी बनकर सबलो द्वारा, काटे नोचे खाये रे।।
अशुभ भाव के द्वारा मरके, नरक गति उपजाएँ रे।।
वहाँ पे जाके छेदन भेदन के, अतिशय दुख पाये रे।
तिल–तिल खण्ड हुए इस तन के, दुख कहे ना जाये रे।।
प्रबल पुण्य का उदय प्राप्त कर, मानव गति में आये रे।
मोह महामद के कारण से, सम्यक् ज्ञान पाये रे।।
मिथ्यात्वी हो भवनत्रिक में, जन्म लिए अकुलाए रे।
पुण्याश्रव को पाकर के शुभ, देवगति उपजाए रे।।
अन्तिम ग्रवेयक तक पहुँचे, फिर भी चैन ना पाए रे।
देख दूसरों के वैभव को, अति संताप बढ़ाए रे।।
देवायु का क्षय होने पर, एकेन्द्रिय में आये रे।
इस प्रकार धर–धर अनन्त भव, चतुर्गति भटकाए रे।।

पुण्ययोग से मिला जैन कुल, जिन के दर्शन पाए रे।
'विशद' भावना भाते सम्यक्, दर्श कली खिल जाए रे।।

दोहा- पूरी हो मम् कामना, दो हमको आशीष।
शिवपथ के राही बने, हे त्रिभुवनपति ईश।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चौबीसों जिन के चरण, वन्दन मेरा त्रिकाल।
यही भावना है 'विशद', कटे कर्म जंजाल।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
(अर्घ्यावली)

दोहा- लघु स्वयंभू स्तोत्र के, चढ़ा रहे अब अर्घ्य।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने सुपद अनर्घ्य।।

मण्डस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

1. श्री आदिनाथ भगवान

येन स्वयं बोधमयेन लोका, आश्वासिताः केचन वित्तकार्ये।
प्रबोधिताः केचन मोक्षमार्गे, तमादिनाथं प्रणमामि नित्यम्।।1।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

जिसने आत्म ज्ञान के द्वारा, पर का भी उपकार किया।
वित्त कार्य अरु मोक्षमार्ग पर, प्रेरित कर उद्धार किया।।
मोक्षमार्ग को प्रभु ने पाया, मैं भी उसको वरण करूँ।
आदिनाथ के श्री चरणों में, विशद भाव से नमन् करूँ।।1।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

2. श्री अजितनाथ भगवान

इन्द्रादिभिः क्षीरसमुद्र-तोयैः, संस्नापितो मेरुगिरौ जिनेन्द्रः।
यः कामजेता जन-सौख्यकारी, तं शुद्ध-भावादजितं नमामि।।2।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

जो सुमेरु पर्वत के ऊपर, ऐरावत पर लाए थे।
देवों ने क्षीरोदधि द्वारा, शुभ अभिषेक कराए थे।।
सुखदाता अरु कर्म विजेता, के पद को मैं वरण करूँ।
अजितनाथ के श्रीचरणों में, विशद भाव से नमन् करूँ।।2।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

3. श्री संभवनाथ भगवान

ध्यान-प्रबन्धः-प्रभवेन येन, निहत्य कर्म-प्रकृतिः समस्ताः।
मुक्ति-स्वरूपां पदवी प्रपेदे, तं संभवं नौमि महानुरागात्।।3।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

जिनने शुद्ध ध्यान के द्वारा, कर्म घातिया नाश किए।
मोक्ष महापद पाकर के जो, सिद्ध शिला पर वास किए।।
श्रीफल अर्पित करके मैं प्रभु, मोक्षमहल को ग्रहण करूँ।
संभव जिन के श्रीचरणों में, विशद भाव से नमन् करूँ।।3।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

4. श्री अभिनंदननाथ भगवान

स्वप्ने यदीया जननी क्षपायां, गजादि वह्नयन्तमिदं ददर्श।
यत्तात इत्याह गुरुः परोऽयं, नौमि प्रमोदादभिनन्दनं तम्।।4।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

जिनकी माँ को रात्रि में शुभ, सोलह सपने आए थे।
गज से लेकर के अग्नी तक, महत् चिन्ह दर्शाये थे।।
पिता के द्वारा श्रेष्ठ कहे जो, उनको कैसे वरण करूँ।
अभिनंदन जिन के चरणों में, प्रमुदित होकर नमन् करूँ।।4।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

5. श्री सुमतिनाथ भगवान

कुवादिवादं जयता महान्तं, नय-प्रमाणैर्वचनैर्जगत्सु।
जैनं मतं विस्तरितं च येन, तं देव-देवं सुमतिं नमामि।।5।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

अनेकांत अरु स्याद्वाद शुभ, महत् धर्म जिनने पाया।
नय प्रमाण सम्य् वचनों से, जिनमत को भी फैलाया।।
कुमत वादियों को जीता है, उस मत को मैं ग्रहण करूँ।
सुमतिनाथ देवाधिदेव को, विशद भाव से नमन् करूँ।।5।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

6. श्री पदमप्रभु भगवान

यस्यावतारे सति पितृधिष्णये, ववर्ष रत्नानि हरेर्निदेशात्।
धनाधिपः षण्णव-मासपूर्वं, पद्मप्रभं तं प्रणमामि साधुम्।।6।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

जन्म समय सौधर्म इन्द्र ने, धनपति को आदेश दिया।
छह नौ माह पूर्व रत्नों की, वृष्टी का संदेश दिया।।
जिस पद को प्रभु ने पाया है, उसका मैं आचरण करूँ।
पद्मप्रभु के श्रीचरणों में, विशद भाव से नमन् करूँ।।6।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

7. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान

नरेन्द्र सर्पेश्वर - नाकनाथै, र्वाणी भवन्ती जगृहे स्वचित्ते।
यस्यात्मबोधः प्रथितः सभाया, महं सुपार्श्वं ननु तं नमामि।।7।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

केवल ज्ञान प्रकट होने पर, जीवों को उपदेश दिया।
चक्रवर्ति धरणेन्द्र सुरों ने, दिव्य ध्वनि को ग्रहण किया।।
दिव्य देशना पाकर मैं भी, समतापूर्वक मरण करूँ।
प्रभु सुपार्श्व के पद पंकज में, विशद भाव से नमन् करूँ।।7।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

8. श्री चन्द्रप्रभु भगवान

सत्प्रातिहार्यातिशय - प्रपन्नो, गुणप्रवीणो हत-दोष-संगः।
यो लोक-मोहान्ध-तमः-प्रदीपश्-चन्द्रप्रभं तं प्रणमामि भावात्।।8।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

मूर्छा दोष रहित गुण संयुत, प्रातिहार्य वसु पाये हैं।
अतिशय चौंतिस सहित सुधी जिन, केवल ज्ञान जगाए हैं।।
दीपक मोह तिमिर के नाशक, मोह का मैं अपहरण करूँ।
चन्द्रप्रभु के पद पंकज में, विशद भाव से नमन् करूँ।।8।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

9. श्री पुष्पदन्त भगवान

गुप्तित्रयं पञ्च महाव्रतानि, पंचोपदिष्टाः समितिश्च येन।
बभाण यो द्वादशधा तपांसि, तं पुष्पदन्तं प्रणमामि देवम्।।9।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

पांच महाव्रत समिति गुप्ति का, जिसने शुभ उपदेश किया।
द्वादश तप तपने का पावन, भव्यों को संदेश दिया।।
वीतरागता को पाया शुभ, मैं भी उसका वरण करूँ।
पुष्पदंत प्रभु के पद पंकज, विशद भाव से नमन् करूँ।।9।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10. श्री शीतलनाथ भगवान

ब्रह्मा-व्रतान्तो जिन नायके नोत्, तम-क्षमादिर्दशधापि धर्मः।
येन प्रयुक्तो व्रत बन्ध-बुद्ध्या, तं शीतलं तीर्थकरं नमामि।।10।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

उत्तम क्षमा धर्म से लेकर, ब्रह्मचर्य तक अन्त रहा।
दश प्रकार का धर्म व्रतों की, परम्परा को आप कहा।।
केवलज्ञान बुद्धि को पाकर, मैं भी उसको वरण करूँ।
शीतलनाथ प्रभु के पद में, विशद भाव से नमन् करूँ।।10।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

11. श्री श्रेयांसनाथ भगवान

गणे जनानन्दकरे धरान्ते, विध्वस्त - कोपे प्रशमैकचित्ते।
यो द्वादशाङ्गं श्रुतमादिदेश, श्रेयांसमानौमि जिनं तमीशम्।।11।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

द्वादश गण से पृथ्वी तल तक, भव्यों में आनंद भरें।
कोप विनाशक शांत स्वरूपी, द्वादशांग उपदेश करें।।
द्वादशांग श्रुत के स्वामी जिन, उनको उर में वरण करूँ।
श्रेयनाथ के श्रीचरणों में, विशद श्रेय से नमन् करूँ।।11।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

12. श्री वासुपूज्य भगवान

मुक्त्यङ्गनाया रचिता विशाला, रत्नत्रयी-शेखरता च येन।
यत्कण्ठ-मासाद्य बभूव श्रेष्ठा, तं वासुपूज्यं प्रणमामि वेगात्।।12।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

रत्नत्रय के महत् हार का, जिनने शुभ निर्माण किया।
मुक्तिवधू ने कण्ठ में जिसको, श्रेष्ठ भाव से धार लिया।।
प्रभु ने जिन रत्नों को पाया, मैं भी उनको वरण करूँ।
वासुपूज्य के पूज्य चरण में, विशद भाव से नमन् करूँ।।12।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

13. श्री विमलनाथ भगवान

ज्ञानी विवेकी परम स्वरूपी, ध्यानी व्रती प्राणि-हितोपदेशी।
मिथ्यात्वघाती शिवसौख्यभोजी,बभूव यस्तं विमलं नमामि।।13।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

सम्यक् ज्ञान विवेक युक्त जो, परम स्वरूप के धारक हैं।
ध्यानी व्रती हैं मिथ्याघाती, जन-जन के उपकारक हैं।।
मोक्ष सुखों को पाने वाले, मैं भी उसका वरण करूँ।
विमल नाथ के विमल चरण में, विशद भाव से नमन् करूँ।।13।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14. श्री अनन्तनाथ भगवान

आभ्यन्तरं बाह्यमनेकधा यः, परिग्रहं सर्व मपाचकार।
यो मार्गमुद्दिश्य हितं जनानां, वन्दे जिनं तं प्रणमाम्यनन्तम्।।14।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

जिनने जीवों के हित हेतू, मोक्षमार्ग को लक्ष्य किया।
अन्तरंग बहिरंग परिग्रह, सभी पूर्णतः त्याग दिया।।
राग त्याग बन गये दिगम्बर, मैं भी वह आचरण करूँ।
अनंत नाथ जिनवर के पद में, विशद भाव से नमन् करूँ।।14।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

15. श्री धर्मनाथ भगवान

सार्द्धं पदार्था नव सप्त तत्त्वैः, पञ्चास्तिकायाश्च न कालकायाः।
षड्द्रव्यनिर्णीति-रलोकयुक्तिर्, येनोदिता तं प्रणमामि धर्मम्।।15।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

सप्त तत्त्व अरु नव पदार्थ हैं, काल ना अस्ति काय कहा।
अस्तिकाय हैं पांच द्रव्य छह, अरु अलोक आकाश रहा।।
जिसमें इनका कथन किया है, मैं भी उसका मनन करूँ।
धर्मनाथ जिन के चरणों में, विशद धर्मयुत नमन् करूँ।।15।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

16. श्री शांतिनाथ भगवान

यश्चक्रवर्ती भुवि पञ्चमोऽभूच् , छ्रीनन्दनो द्वादशको गुणानाम्।
निधि-प्रभुः षोडशको जिनेन्द्रस्, तं शान्तिनाथं प्रणमामि भेदात्।।16।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

पंचम चक्रवर्ति पृथ्वी पर, नव निधि रत्नों के स्वामी।
कामदेव द्वादश सोलहवे, जिनवर मुक्ती पथगामी।।
विशद गुणों को जिनने पाया, मैं भी उनको ग्रहण करूँ।
शांतिनाथ तीर्थेश चरण में, मन वच तन से नमन् करूँ।।16।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

17. श्री कुन्थुनाथ भगवान

प्रशंसितो यो न बिभर्ति हर्षं, विराधितो यो न करोति रोषम्।
शीलं-व्रताद् ब्रह्मपदं गतो यस्, तं कुन्थुनाथं प्रणमामि हर्षात्।।17।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

नहीं प्रशंसा में हर्षित हों, निंदा में ना रोष करें।
शीलव्रतों का पालन करते, नहीं कभी विद्वेष करें।।
आतमपद को प्राप्त हुए जो, मैं भी उसका वरण करूँ।
कुन्थुनाथ के विशद चरण में, हर्षभाव से नमन् करूँ।।17।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

18. श्री अरहनाथ भगवान

न संस्तुतो न प्रणतः सभायां, यः सेवितोऽन्तर्गण-पूरणाय।
पद-च्युतैः केवलिभि-र्जिनस्य, देवाधिदेवं प्रणमाम्यरं तम् ।।18।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

अन्तर्गण की पूर्ति हेतु जो, समवशरण में आये थे।
नमन् स्तुति रहित केवली, पूर्ण समादर पाए थे।।
तीर्थंकर जिनदेव परम हैं, मैं उस पद को ग्रहण करूँ।
अरहनाथ के पद पंकज में, विशद भाव से नमन् करूँ।।18।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

19. मल्लिनाथ भगवान

रत्नत्रयं पूर्व-भवान्तरे यो, व्रतं पवित्रं कृतवा-नशेषम्।
कायेन वाचा मनसा विशुद्ध्या, तं मल्लिनाथं प्रणमामिभक्त्या।।19।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

मन, वच, तन से पूर्व भवों में, पूर्ण विशुद्धी को पाया।
रत्नत्रय व्रत पालन करके, निज आतम को भी ध्याया।।
मोहमल्ल को किया पराजित, मैं भी उसका हनन करूँ।
मल्लिनाथ जिनदेव चरण में, विशद भक्ति युत नमन् करूँ।।19।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

20. श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान

ब्रुवन्नमः सिद्ध–पदाय वाक्य, मित्यग्रहीद्यः स्वयमेव लोचम्।
लौकान्तिकेभ्यः स्तवनं निशम्य, वन्दे जिनेशं मुनिसुव्रतं तम्।।20।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

लौकांतिक देवों की श्रुति सुन, सिद्ध के पद को नमन् किया।
श्री सिद्धाय नमः कह करके, अपने हाथों लोंच किया।।
प्रभु ने सिद्ध के पद को पाया, मैं भी वह पद वरण करूँ।
मुनिसुव्रत के पद पंकज में, विशद भाव से नमन् करूँ।।20।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

21. श्री नमीनाथ भगवान

विद्यावते तीर्थकराय तस्मा, याहारदानं ददतो विशेषात्।
गृहे नृपस्याजनि रत्नवृष्टिः, स्तौमि प्रमाणान्नयतो नमिं तम्।।21।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

ज्ञानाचार युत तीर्थंकर के, नृप के घर आहार हुए।
रत्न वृष्टि तब की देवों ने, उनके भी उद्धार हुए।।
विशद ज्ञान को पाने हेतु, कर्मों से संग्राम करूँ।
नमीनाथ जिन के चरणों में, स्तुति सहित प्रणाम करूँ।।21।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री नमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

22. श्री नेमिनाथ भगवान

राजीमतीं यः प्रविहाय मोक्षे, स्थितिं चकारा–पुनरागमाय।
सर्वेषु जीवेषु दया दधानस्, तं नेमिनाथं प्रणमामि भक्त्या।।22।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

जीवों पर करुणा धारण कर, जग से नाता तोड़ चले।
पुनरागमन मैटने हेतु, राजीमती को छोड़ चले।।
मोक्ष में स्थित हुए प्रभु जी, जाकर मैं विश्राम करूँ।
भक्तिभाव से नेमिनाथ जिन, पद में विशद प्रणाम करूँ।।22।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

23. श्री पार्श्वनाथ भगवान

सर्पाधिराजः कमठारितो यै, र्ध्यान–स्थितस्यैव फणावितानैः।
यस्योपसर्गं निरवर्त–यत्तं, नमामि पार्श्वं महतादरेण।।23।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

ध्यान अवस्था में बैठे थे, कमठ ने तब उपसर्ग किया।
फण फैलाया पद्मावती ने, अरु धरणेन्द्र ने दूर किया।।
ध्यान के द्वारा विशद ज्ञान हो, मैं भी उसका मनन करूँ।
महतभाव से पार्श्वनाथ के, श्री चरणों में नमन् करूँ।।23।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

24. श्री महावीर भगवान

भवार्णवे जन्तु-समूह-मेन-माकर्षयामास हि धर्म-पोतात्।
मज्जन्त-मुद्वीक्ष्य य एनसापि, श्रीवर्द्धमानं प्रणमाम्यहं तम्।।24।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

पाप के कारण भवसागर में, डूब रहे थे जो प्राणी।
देख उन्हें निश्चय करके तब, सुना गये अमृत वाणी।।
धर्मपोत से उन्हें बचाया, धर्म को ध्याऊँ चारों याम।
तीर्थंकर श्रीवर्धमान को, विशदभाव से करूँ प्रणाम।।24।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

25. चौबिस जिन का पूर्णार्घ्य

यो धर्मं दशधा करोति पुरुषः, स्त्री वा कृतोपस्कृतं,
सर्वज्ञ-ध्वनि-संभवं त्रिकरण, व्यापार शुद्ध्यानिशम्।
भव्यानां जयमालया विमलया, पुष्पाञ्जलिं दापयन्,
नित्यं स श्रियमातनोति सकलं, स्वर्गापवर्ग-स्थितिम्।।25।।

प्रभु स्वयंभू कहलाते, इस जग में पूजे जाते।
सारा जग महिमा गावे, भक्ती कर मुक्ती पावे।।

रचा भव्य स्त्री पुरुषों को, विमल गुणानुवाद महान्।
अर्हत् की वाणी में भाषित, दश प्रकार का धर्म प्रधान।।
मन वच तन की शुद्धी पूर्वक, पुष्प समर्पित करते हैं।
एक लक्ष्मी को पाकर शुभ, स्वर्ग मोक्ष पद वरते हैं।।25।।

प्रभु शिवराह दिखाते हैं, मोक्ष महल पहुँचाते हैं।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादि तीर्थंकराय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- स्तोत्रों का पाठ शुभ, करते बालाबाल।
लघु स्वयंभूस्तोत्र की, गाते हम जयमाल।।

चौपाई

लघू स्वयंभू है स्तोत्र, सम्यक् भक्ति का शुभ स्रोत।
पूज्य रहे चौबिस तीर्थेश, जिसमें वर्णन रहा विशेष।।

किया गया अनुपम गुणगान, जो है शिवपुर का सोपान।
भाव सहित करते जो पाठ, उनके होते ऊँचे ठाठ।।

चौबीसी कई हुईं महान्, उनका करके कई गुणगान।
किए स्वयं का जो कल्याण, पाए जीव कई निर्वाण।।

स्वयं ज्ञान पाते तीर्थेश, अतः स्वयंभू कहे जिनेश।
चार घातिया करके नाश, करते केवलज्ञान प्रकाश।।

देते जग को हित उपदेश, छियालिस गुणधारी तीर्थेश।
दोष अठारह रहित ऋशीष, तीन लोक के होते ईश।।

दिव्य ध्वनि देते भगवान, भव्य जीव सुनते हैं आन।
कोई पाते हैं श्रद्धान, कोई पाते सम्यक्ज्ञान।।

चारित धारण करते जीव, पुण्य प्राप्त कई करें अतीव।
भक्ति भाव से करें प्रणाम, श्रद्धा से लेते कई नाम।।

मानतुंग मुनिवर गुणवान, आदिनाथ की भक्ति महान्।
करके दिए भक्ति का स्रोत, कहलाया भक्तामर स्तोत्र।।

कवि धनञ्जय थे गुणवान, वह भी भक्ती किए महान्।
कुमुदचन्द गाए मुनिराज, किए भक्ति मुनि वादीराज।।

भक्ती मुक्ती का सोपान, ऐसा कहते हैं भगवान।
सोमा ने पाया उपहार, नाग बना भक्ती से हार।।

सीता ने की भक्ति प्रधान, बना अग्नि से कमल महान्।
वारिषेण की भक्ति अपार, खड्ग बना तब सुन्दर हार।।

रही भावना मेरी एक, मन में जागे सदा विवेक।
जिन चरणों में करें प्रणाम, भक्ती कर पायें शिवधाम।।

दोहा– पढ़कर के स्तोत्र को करते भक्ति विधान।
उन जीवों का शीघ्र ही, हो जाता कल्याण।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रभु स्वयंभू आप हैं, हम चरणों के दास।
'विशद' मोक्ष पद पाएँ हम, पूरी कर दो आस।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रशस्ति

स्वस्ति श्री वीर निर्वाण सम्वत् 2539 विक्रम सम्वत् 2070 मासोत्तमेमासे शुभ मासे श्रावण मासे शुक्ल पक्षे शुभ तिथि एकम् बुधवासरे श्री कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कारगणे सेनगच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्या जातास्तत् शिष्यः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः श्री भरतसागराचार्या श्री विरागसागराचार्या जातास्तत् शिष्यः विशदसागराचार्या कर कमले **विशद लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान** लिख्यते इति शुभं भूयात्।

चौबीस जिन की आरती

(तर्ज – मांई रि मांई ...)

चौबीस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।

ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।
सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता।।
सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए। विशद आरती ...

पद्म प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभु अरु पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई।।
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए। विशद आरती ...

श्रेयनाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभु अविकारी, जग में अन्तर्यामी।।
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए। विशद आरती ...

शांति कुन्थु अरु अरह नाथ जी, तीन–तीन पद पाए।
चक्री काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए।।
मल्लिनाथ जी मोह मल्ल को, क्षण में मार भगाए। विशद आरती ...

मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमि धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करुणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर कहलाए। विशद आरती ...

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.......

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेदशिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सवदोष प्रायश्चित्त विधान
36. लघु पंचमेरु विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चँवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पत्ति विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषिमण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभु विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद् ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्त्वार्थ सूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद् नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
58. श्री दशलक्षण विधान
59. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
60. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
61. अभिनव वृहद् कल्पतरु विधान
62. वृहद् श्री समवशरण महामण्डल विधान
63. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
64. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
65. विद्यमान तीर्थंकर विधान
66. कैवल्य नवलब्धि विधान
67. अर्हत् महिमा विधान
68. अर्हत्नाम विधान
69. मृत्युञ्जय विधान
70. अर्हत्-धर्मचक्र विधान
71. कालसर्पयोग निवारक महामण्डल विधान
72. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
73. श्री सम्मेदशिखर कूटपूजन विधान
74. त्रिविधान संग्रह-1
75. पंचविधान संग्रह
76. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
77. श्री कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गाँव)
78. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
79. श्री विदेह क्षेत्र विधान
80. श्री सम्यक् आराधना विधान
81. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
82. लघु नवदेवता विधान
83. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
84. विशद महा-अर्चना विधान
85. त्रिविधान संग्रह-11
86. विशद पञ्चागम संग्रह
87. जिन गुरु भक्ति संग्रह
88. धर्म की दस लहरें
89. स्तुति स्तोत्र संग्रह
90. विराग वंदन
91. बिन खिले मुरझा गए
92. जिन्दगी क्या है
93. धर्म प्रवाह
94. भक्ति के फूल
95. विशद श्रमण चर्या
96. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
97. इष्टोपदेश चौपाई
98. द्रव्य संग्रह चौपाई
99.. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
100. समाधितन्त्र चौपाई
101. सुभाषित रत्नावलि चौपाई
102. संस्कार विज्ञान
103. बाल विज्ञान भाग-3
104. नैतिक शिक्षा भाग-1,2,3
105. विशद स्तोत्र संग्रह
106. भगवती आराधना
107. चिंतवन सरोवर भाग-1
108. चिंतवन सरोवर भाग-2
109. जीवन की मन:स्थितियाँ
110. आराध्य अर्चना
111. आराधना के सुमन
112. मूक उपदेश भाग-1
113. मूक उपदेश भाग-2
114. विशद प्रवचन पर्व
115. विशद ज्ञान ज्योति
116. जरा सोचो तो
117. विशद भक्ति पीयूष
118. विशद मुक्तावली
119. संगीत प्रसून
120. आरती चालीसा संग्रह
121. भक्तामर भावना
122. बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
123. कल्याण मंदिर विधान
124. सहस्रकूट जिनार्चना संग्रह
125. विशद महा अर्चना संग्रह
126. विशद जिनवाणी संग्रह
127. विशद वीतरागी संत
128. काव्य पुञ्ज
129. पञ्च जाप्य
130. श्री चँवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
131. बिजोलिया तीथपूजन आरती चालीसा संग्रह
132. विराजनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह